VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

WEEKLY FOCUS
#87, JAN 2023

भारत की आर्थिक कूटनीति पर एक नज़र

JAIPUR HYDERABAD PUNE AHMEDABAD LUCKNOW CHANDIGARH GUWAHATI RANCHI ALLAHABAD BHOPAL

परिचय

भारत, अपने बढ़ते आर्थिक कौशल के साथ वैश्विक व्यवस्था में ग्लोबल लीडर के रूप में उभर रहा है। दूसरी ओर, वैश्विक व्यवस्था में वैश्विक ध्रुवीकरण, भू–राजनीतिक तनाव और आर्थिक गिरावट जैसे कई आघातों के कारण लगातार बदलाव हो हैं। हालांकि, इन चुनौतियों को अवसरों में बदलने की ज़रुरत है। ऐसा करके ही भारत की अंतर्राष्ट्रीय आकांक्षाओं तथा भारत के आर्थिक कूटनीतिक कार्यक्रम के पुनर्सुधार संबंधी मांगों को पूरा किया जा सकेगा।

इस संदर्भ में, हम निम्नलिखित प्रश्नों पर चर्चा करेंगे तथा उनका उत्तर खोजने का प्रयास करेंगे:

- आर्थिक कूटनीति क्या है और यह क्यों महत्वपूर्ण है?
- आर्थिक कूटनीति के प्रमुख साधन क्या हैं और उनकी प्रासंगिकता क्या है?
- भारत अपनी वैश्विक आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए आर्थिक कूटनीति के प्रमुख साधनों का उपयोग करने में कहां तक सफल रहा है?
- भारत की आर्थिक कूटनीति के लिए केंद्रित क्षेत्र कौन–कौन से हैं और वे क्यों महत्वपूर्ण हैं?
- भारत की आर्थिक कूटनीति के क्रियान्वयन में प्रमुख चुनौतियां क्या हैं?
- राष्ट्रीय हितों की प्राप्ति को संभव बनाने के लिए भारत की आर्थिक कूटनीति को कैसे और बेहतर बनाया जा सकता है?

आर्थिक कूटनीति क्या है और यह क्यों महत्वपूर्ण है?

- आर्थिक कूटनीति वह साधन है जो **विदेश नीति के संचालन हेतु आवश्यक** है। इसे मोटे तौर पर कूटनीति के एक ऐसे पहलू के रूप में परिभाषित किया जाता है जो मुख्यतः **अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंधों के इर्द–गिर्द केंद्रित** होता है।
- इसका प्रयोग देश के आर्थिक, राजनीतिक और रणनीतिक हितों को प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यह **अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के संचालन में आर्थिक साधनों के उपयोग** के जरिए देश के हितों को पूरा करने पर केंद्रित होता है।
- **इसे विदेशी सरकारों के साथ–साथ अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की नीतियों और विनियामकीय निर्णयों को प्रभावित करने** के लिए तैयार किया जाता है।
- नियमतः आर्थिक कूटनीति का निष्पादन देश के सरकारी प्रतिनिधियों द्वारा ही किया जाता है। हालांकि, आज के बदलते परिदृश्य में आर्थिक कूटनीति के सफल क्रियान्वयन में निजी क्षेत्रकों की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो गई है।

आर्थिक कूटनीति के उद्देश्य

- देश को एक प्रमुख आर्थिक शक्ति के रूप में प्रस्तुत करना,
- अनुकूल बहुपक्षीय व्यापार समझौतों को सुनिश्चित करना,
- विदेशी संसाधनों तक पहुंच को सुनिश्चित करना और देश में विदेशी निवेश को बढ़ावा देना,
- विदेशों में निर्यात और व्यवसायों को बढ़ावा देना,
- आर्थिक गतिविधियों के माध्यम से राजनीतिक उद्देश्यों को प्राप्त करना आदि।

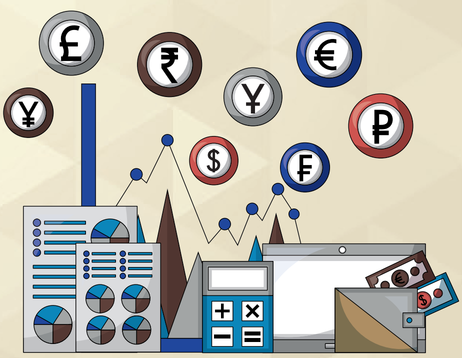

आर्थिक कूटनीति के प्रमुख साधन क्या हैं और उनकी प्रासंगिकता क्या है?

- **निवेश को आकर्षित करना और निर्यात को बढ़ावा देना:** इस तरह की गतिविधियां किसी भी देश को एक आर्थिक शक्ति के रूप में उभरने में मदद करती हैं तथा इससे वैश्विक राजनीति में उस देश की स्थिति भी मजबूत होती है।
  - संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा विदेशी कंपनियों के निवेश को आकर्षित करके धन का सृजन करना, इसका एक उल्लेखनीय उदाहरण है। इसी प्रकार, 1970 के दशक के अंत तक चीन द्वारा आर्थिक सुधारों को अपनाने से चीन को एक प्रमुख वैश्विक आर्थिक शक्ति बनने में मदद मिली थी।

विचारणीय तथ्य

दशकों तक, संयुक्त राज्य अमेरिका विदेशी कंपनियों के लिए निवेश का एक आकर्षक गंतव्य रहा है। इसके लिए उत्तरदायी कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं:

- सर्वश्रेष्ठ नियामकीय प्रदर्शन, विशेषकर कर भुगतान के मामले में।
- एक बड़ा और समृद्ध उपभोक्ता बाजार।
- विविधतापूर्ण संस्कृति और नवाचार हेतु अनुकूल स्थितियां।
- गहन पूंजी बाजार और दुनिया की शीर्ष प्रतिभाओं तक पहुंच।

1970 के दशक के अंत तक चीन द्वारा आर्थिक सुधारों को अपनाने से उसे एक प्रमुख वैश्विक आर्थिक शक्ति बनने में मदद मिली। इन सुधारों में निम्नलिखित शामिल हैं:

- ग्रामीण उद्यमों और निजी व्यवसायों के गठन को प्रोत्साहित करना।
- विदेशी व्यापार और निवेश को उदार बनाना।
- कुछ शर्तों के साथ सरकारी नियंत्रण व्यवस्था में ढील।
- सौर पैनल जैसे उभरते उद्योगों में निवेश।

- **भागीदार देशों के लिए वित्त जुटाना:** भागीदार देशों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने से एक विश्वसनीय विकास भागीदार के रूप में देश की छवि को मजबूत करने में मदद मिलती है। साथ ही, यह राजनीतिक प्रभाव और समर्थक समूहों के निर्माण में भी सहायक होता है।
  - उदाहरण के लिए– विकास परियोजनाओं के लिए पाकिस्तान और नेपाल जैसे पड़ोसी देशों को दी जाने वाली वित्तीय सहायता ने चीन के अंतर्राष्ट्रीय प्रभुत्व में वृद्धि की है।

- **अंतर्राष्ट्रीय नियमों को स्थापित करने और उन्हें लागू करने के लिए समर्थन जुटाना:** बहुपक्षीय संगठनों के लिए नियम निर्धारित करने और उन्हें लागू करने की क्षमता, किसी भी देश को उसके हितों के अनुरूप अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को आकार देने में मदद करती है।
  - उदाहरण के लिए– विश्व व्यापार संगठन, UNSC जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को अधिकांशतः यू.एस.ए., यू.के. और रूस जैसे विकसित देशों द्वारा निर्मित किया गया है। अतः ये ज्यादातर उनके अनुकूल ही कार्य करते हैं।

- **आर्थिक प्रतिबंध:** आर्थिक प्रतिबंधों को विदेशी और सुरक्षा नीति संबंधी उद्देश्यों, जैसे– आतंकवाद, अप्रसार, लोकतंत्र और मानवाधिकारों को बढ़ावा देने, संघर्ष समाधान आदि के लिए अपनाया जाता है। इसके अंतर्गत जारी व्यापार और वित्तीय संबंधों को समाप्त करने जैसे उपाय अपनाए जाते हैं। इसका **उपयोग उन देशों के विरुद्ध किया जाता है जिनके साथ अच्छे राजनीतिक संबंध नहीं होते हैं।** इसके तहत उन देशों को, किसी विशिष्ट देश के अनुकूल नीतियों को अपनाने के लिए बाध्य किया जाता है।
  - समय–समय पर कई अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं के प्रतिक्रिया स्वरूप पश्चिमी देशों ने अमेरिका के नेतृत्व में आर्थिक प्रतिबंधों का सहारा लिया है। ईरान और नॉर्थ कोरिया के परमाणु कार्यक्रम को रोकने तथा यूक्रेन में रूस के हस्तक्षेप जैसे मामलों में आर्थिक प्रतिबंधों का सहारा लिया गया है।

विचारणीय तथ्य

वित्तीय सहायता निम्नलिखित तरीकों द्वारा प्रदान की जाती है:

- **संप्रभु इकाई द्वारा:** उदाहरण के लिए– जापान इंटरनेशनल को–ऑपरेशन एजेंसी एक सरकारी एजेंसी है जो जापान सरकार की ओर से आधिकारिक विकास सहायता (Official Development Assistance: ODA) प्रदान करती है।
- **बहुपक्षीय तरीके से:** उदाहरण के लिए– एशियाई विकास बैंक (ADB) की स्थापना मुख्य रूप से एशिया–प्रशांत क्षेत्र के विकास पर ध्यान केंद्रित करने वाली क्षेत्रीय वित्तीय संस्था के रूप में की गई थी।

विचारणीय तथ्य

वित्तीय सहायता निम्नलिखित तरीकों द्वारा प्रदान की जाती है:

- **वर्तमान में आर्थिक शक्ति** का स्थानांतरण पश्चिम से पूर्व की ओर हो रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसे परिदृश्य में पश्चिम द्वारा कठोर और लगातार प्रतिबंध आगे चलकर **पश्चिमी देशों के वित्तीय लाभ को जोखिम में डाल** सकते हैं।
- परिणामतः ये देश चुनिंदा प्रतिबंधों का सहारा लेते हैं। रूस के खिलाफ हालिया अमेरिकी प्रतिबंध इसका एक उदाहरण है।
  - संयुक्त राज्य अमेरिका अपने **कुल पोटेशियम उर्वरक उपयोग का लगभग 96%** रूस से आयात करता है। साथ ही, यह अपने परमाणु संयंत्रों को संचालित करने वाले यूरेनियम के लगभग आधे हिस्से के लिए रूस एवं उसके सहयोगियों (कजाकिस्तान और उज्बेकिस्तान) पर निर्भर है।
  - यही कारण है कि न तो पोटेशियम उर्वरक और न ही यूरेनियम को **आयात प्रतिबंध सूची** में शामिल किया गया है। इसके अलावा, रूस के कच्चे तेल और गैस पर प्रतिबंध अमेरिका के आयात का केवल 8% है।

भारत अपनी वैश्विक आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए आर्थिक कूटनीति के प्रमुख साधनों का उपयोग करने में कहां तक सफल रहा है?

- **निवेश को आकर्षित करना और निर्यात को बढ़ावा देना:** गौरतलब है कि भारत ने **वैश्विक स्तर पर अपनी अर्थव्यवस्था को और अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए** अनेक पहलों को शुरू किया है। इनमें निम्नलिखित शामिल हैं:
  - **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश** (FDI) के लिए मानदंडों को उदार बनाकर घरेलू बाजार में निवेश को आकर्षित करना, भारत में ईज ऑफ़ डूइंग बिज़नेस को बढ़ावा देना, अलग–अलग क्षेत्रकों के लिए उत्पादन से संबद्ध प्रोत्साहन (PLI) योजना, मेक इन इंडिया पहल, आत्मनिर्भर भारत अभियान आदि।
    - उपर्युक्त कदमों के परिणामस्वरूप, भारत में **FDI अंतर्वाह** 2020–21 में बढ़कर अपने उच्चतम स्तर अर्थात् 81.97 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया था।
  - **भारतीय कॉर्पोरेट्स के जरिए विदेशी निवेश को बढ़ाने** का प्रयास किया गया है। इसके लिए शेयरों, स्थानीय परिसंपत्तियों और विदेशी परिसंपत्तियों को गिरवी रखकर एकत्रित किए जाने वाले धन पर आरोपित सीमा को समाप्त कर दिया गया है।
- **भागीदार देशों के लिए वित्तीय सहायता जुटाना:** भारत अपनी स्वतंत्रता के बाद से वैश्विक **दक्षिण–दक्षिण सहयोग** के संदर्भ में एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाता रहा है। यह सहयोग, **बहुपक्षीय मंचों** के साथ–साथ द्विपक्षीय विकास सहायता के माध्यम से प्रदान करने की कोशिश की गई है।
  - **बहुपक्षीय मंचों के माध्यम से वित्त–पोषण:**

- **इंडिया–यू.एन. डेवलपमेंट फंड:** भारत द्वारा 2017 में 150 मिलियन अमेरिकी डॉलर की सहायता से इस कोष की स्थापना की गई थी। इसकी स्थापना विकासशील देशों के साथ महत्वपूर्ण क्षेत्रों में काम करने के लिए की गयी थी। इन क्षेत्रों में जलवायु लचीलापन, वित्तीय स्थिरता, लैंगिक समानता, नवीकरणीय ऊर्जा आदि शामिल हैं।
- **अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA):** ISA का उद्देश्य 2030 तक 1,000 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक की राशि एकत्र करके सदस्य देशों की जरूरतों को पूरा करना है। इस धन के माध्यम से यह गठबंधन सदस्य देशों के भविष्य की जरूरतों को पूरा करने हेतु सौर ऊर्जा उत्पादन, भंडारण और प्रौद्योगिकियों से संबंधित सहयोग उपलब्ध कराने में मदद करेगा।
- **जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (UNFCCC):** भारत ने COP–27 में 'हानि और क्षति' कोष ('Loss and Damage' fund) के समर्थक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। यह कोष जलवायु परिवर्तन के कारण उत्पन्न होने वाली आपदाओं से भारी नुकसान का सामना करने वाले विकासशील देशों में बुनियादी ढांचे के पुनर्निर्माण और आर्थिक सुधार के लिए वित्त–पोषण प्रदान करता है।

- **द्विपक्षीय विकास सहायता:** भारत स्वतंत्रता के बाद से अलग–अलग तौर–तरीकों के माध्यम से भागीदार देशों को सहायता प्रदान करता रहा है। आर्थिक वृद्धि के साथ–साथ भारत ने **विकास सहायता संबंधी मद में भी वृद्धि की है।** इसके परिणामस्वरूप, भारत की **द्विपक्षीय संबंधों और क्षमताओं** में भी बढ़ोतरी हुई है। साथ ही, इससे भारत को **सहायता पाने वाले देश के दर्जे से मुक्त होने में भी मदद मिली है।** गौरतलब है कि 1950 और 1960 के दशक के दौरान भारत को सहायता पर निर्भर देश के रूप में देखा जाता था।
  - 2008 और 2020 के बीच, भारत ने अलग–अलग विकास समझौतों के तहत अनुदान और ऋण के रूप में लगभग **8.35 बिलियन अमेरिकी डॉलर का वितरण** किया था।
  - इसके अलावा, रियायती ऋण या लाइन ऑफ क्रेडिट (LoC) के तहत प्रदान की जाने वाली आर्थिक सहायता **पिछले पांच वर्षों में बढ़कर दोगुने से अधिक** हो गई है। यह 2013–14 के 11 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर **2018–19 में लगभग 30 बिलियन अमेरिकी डॉलर** हो गई थी।
    - LoC भारत द्वारा रियायती दरों पर विदेशी सरकारों को दिया जाने वाला ऋण है। इसके लिए **भारतीय निर्यात–आयात बैंक (एक्ज़िम बैंक)**, अंतर्राष्ट्रीय बाजार से बाजार दरों पर उधार लिए गए धन का उपयोग करता है।

आत्मनिर्भर भारत अभियान: ब्रांड इंडिया की दिशा में एक कदम

- इस अभियान को 2020 में शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला बाजारों में भारतीय वस्तुओं को बढ़ावा देना और देश को आत्मनिर्भर बनाना है।
- सरकार ने कई प्रमुख सुधार किए हैं, जैसे–कृषि के लिए आपूर्ति श्रृंखला सुधार, तर्क संगत कर प्रणाली, सरल और स्पष्ट कानून, सक्षम मानव संसाधन और मजबूत वित्तीय प्रणाली।

आत्मनिर्भर भारत के 5 स्तंभ

अर्थव्यवस्था	अवसंरचना	प्रणालियां	जनसांख्यिकी	मांग
ऐसी अर्थव्यवस्था जो क्रमिक रूप से होने वाली वृद्धि की जगह तीव्र वृद्धि की ओर केंद्रित हो।	ऐसी अवसंरचना जो आधुनिक भारत का प्रतिनिधित्व करती हो।	प्रौद्योगिकी संचालित प्रणालियां।	सबसे बड़े लोकतंत्र की गतिशील जनसांख्यिकी।	मांग और आपूर्ति क्षमता का पूर्ण दोहन।

प्रमुख उपलब्धियां

- एयर कंडीशनर जैसे उत्पादों के आयात पर भारत की **निर्भरता कम हुई है।**
- भारत ने स्वदेशी व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (PPE) किट में **आत्मनिर्भरता** प्राप्त की है।
- भारत ने 90 से अधिक देशों को लगभग 65.5 मिलियन स्वदेशी **कोविड–19 टीके** उपलब्ध कराए थे।
- भारत का **वस्तु निर्यात पहली बार बढ़कर 400 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक** हो गया है।

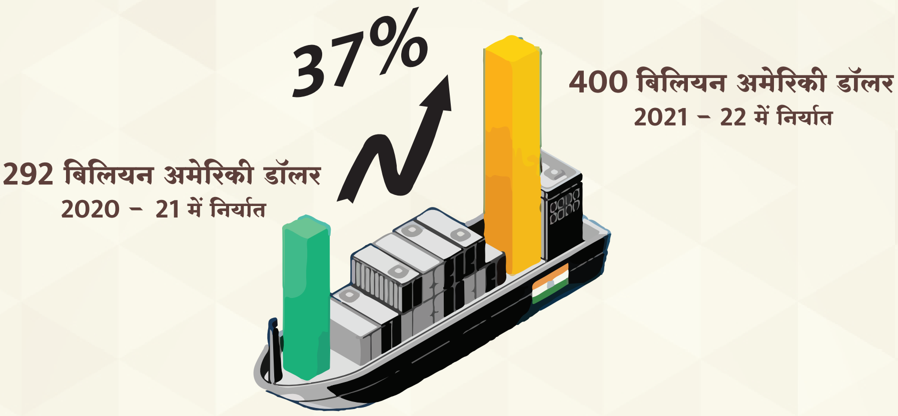

भारत द्वारा अन्य देशों को विकास सहायता प्रदान करने के प्रमुख तौर-तरीके:

क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण

यह प्रशिक्षण, विदेश मंत्रालय (MEA) के अधीन डेवलपमेंट **पार्टनरशिप एडमिनिस्ट्रेशन** (DPA) की देखरेख में **इंडियन टेक्निकल एंड इकोनॉमिक कोऑपरेशन** (ITEC) कार्यक्रम द्वारा प्रदान किया जाता है।

अनुदान सहायता (Grant Assistance)

इसे **DPA द्वारा प्रबंधित** किया जाता है। इसके अलावा, DPA ऋण से संबंधित अन्य सभी सहायताओं का समन्वय भी करता है।

लाइन ऑफ क्रेडिट (LoC) या रियायती ऋण

इसे **एक्जिम बैंक ऑफ इंडिया** के जरिए लागू किया जाता है। इसमें वित्त मंत्रालय समन्वयक की भूमिका निभाता है।

द्विपक्षीय व्यापार और निवेश

इसके जरिए भारतीय बाजार में शुल्क मुक्त या कोटा मुक्त पहुंच प्रदान की जाती है।

भारत द्वारा समर्थित मौजूदा परियोजनाएं

बांग्लादेश, भारतीय विकास सहायता का शीर्ष प्राप्तकर्ता रहा है। वर्तमान में भारत 63 देशों को विकास सहायता प्रदान करता है। इनमें से अधिकांश देश अफ्रीका और एशिया से हैं।

बांग्लादेश

- **2 बिलियन अमेरिकी डॉलर** बसों और ट्रकों की खरीद के लिए
- **2 बिलियन अमेरिकी डॉलर** 12 जिलों में IT / हाईटेक पार्कों की स्थापना के लिए

नेपाल

- **250 मिलियन अमेरिकी डॉलर** 132 किलोवॉट के सोलू कॉरिडोर ट्रांसमिशन लाइन के लिए
- **350 मिलियन अमेरिकी डॉलर** राहुघाट जलविद्युत परियोजना के लिए

म्यांमार

- **199 मिलियन अमेरिकी डॉलर** 16 सिंचाई परियोजनाओं के लिए
- **86 मिलियन अमेरिकी डॉलर** रोलिंग स्टॉक, उपकरणों की खरीद के लिए

अफ्रीका में शुरू की गई कुछ परियोजनाएं

- स्वच्छता/ सीवरेज संबंधी कार्य
- पेयजल
- जल विद्युत संयंत्रों और विद्युत ट्रांसमिशन लाइनों का निर्माण
- ISA के तहत सौर विद्युतीकरण
- सूचना प्रौद्योगिकी (IT) पार्क
- कृषि परियोजनाएं (तंजानिया, मोजाम्बिक, स्वाज़ीलैंड, कैमरून, नाइजर)

स्रोत: सरकारी डेटा

विकास सहायता में हुई भारी वृद्धि के पीछे उत्तरदायी प्रमुख कारण

- भारत को एक **"अग्रणी शक्ति"** के रूप में स्थापित करना।
- अर्थव्यवस्था के बढ़ते आकार के कारण **व्यय योग्य संसाधनों की अधिक उपलब्धता।**
- भारत के पारंपरिक मित्र देशों और उनके भू–भागों में **चीन की बढ़ती पैठ को सीमित करना।**

- **नियम बनाने के लिए समर्थन प्राप्त करना:** वर्तमान में भारत, दक्षिण–दक्षिण सहयोग के लिए एक नेतृत्वकर्ता के रूप में उभरा है। भारत पिछले कई दशकों से, **समान विचारधारा वाले विकासशील देशों के बीच एक सहयोगात्मक गठबंधन के निर्माण हेतु** अग्रणी भूमिका निभाता आ रहा है। इसका उद्देश्य गठबंधन के माध्यम से **व्यापार, जलवायु परिवर्तन और विकास संबंधी नीति पर साझा हितों को संरक्षित** करना है। इसके निम्नलिखित उदाहरण हैं:
  - **सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) का ड्राफ्ट तैयार करना:** SDG का ड्राफ्ट तैयार करने के लिए भारत को **ओपन वर्किंग ग्रुप** में शामिल किया गया था। भारत ने G–77 (134 विकासशील देशों का ब्लॉक) **में भी अग्रणी भूमिका निभाई थी,** जहां इसके दृष्टिकोण आउटकम डॉक्यूमेंट में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं, जैसे:
    - SDG लक्ष्यों की प्राप्ति से जुड़ी प्रगति पर **विशिष्ट संकेतकों और राष्ट्रीय समीक्षाओं को तैयार करना।**
    - **विकास के एजेंडे के संदर्भ में शांति और स्थिरता** को विकास के नजरिए से देखा जाना चाहिए, न कि राजनीतिक दृष्टिकोण से।
  - **विश्व व्यापार संगठन (WTO):** भारत ने कई महत्वपूर्ण किंतु विवादास्पद मुद्दों पर प्रमुख भूमिका निभाई है, उदाहरण के लिए–
    - भारत ने **2013 में बाली मंत्रिस्तरीय सम्मेलन** के दौरान पब्लिक स्टॉक होल्डिंग के मामले में **"पीस क्लॉज़"** को शामिल कराने में अग्रणी भूमिका निभाई थी।
    - भारत और दक्षिण अफ्रीका ने साथ मिलकर कोविड–19 के टीकों के लिए IPR प्रावधानों से छूट लेने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, ताकि ये टीके गरीब देशों के लिए भी सुलभ हो सकें।
  - **विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO):** कोविड–19 महामारी ने WHO की कार्यप्रणाली एवं इससे संबंधित सुधारों की आवश्यकता को वैश्विक चर्चा के केंद्र में ला दिया है। इस संदर्भ में, भारत ने "एप्रोच ऑन WHO रिफॉर्म्स" के अंतर्गत संयुक्त राष्ट्र में नौ सूत्री सुधार एजेंडे को प्रस्तावित किया था। हालांकि, ये वित्त–पोषण तंत्र, सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल को अंतर्राष्ट्रीय चिंता वाले सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल घोषित करने के मानदंड जैसे मुद्दों से संबंधित हैं।
  - **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) में सुधार:** भारत ने G–4 के अन्य सदस्य देशों (जर्मनी, जापान और ब्राजील) के साथ परिषद में अनेक बदलावों के संदर्भ में प्रस्ताव प्रस्तुत किया है ताकि वर्तमान भू–राजनीतिक वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित किया जा सके। इससे संगठन को अधिक प्रतिनिधिक, वैध, कुशल और पारदर्शी बनाया जा सकेगा।
    - इन प्रस्तावों में शामिल हैं– UNSC में स्थायी और गैर–स्थायी सदस्यता का विस्तार करना; परिषद के काम–काज के तरीकों में सुधार करना; तथा अफ्रीकी देशों और लघु द्वीपीय विकासशील देशों (Small Island Developing States: SIDS) सहित विकासशील देशों की आकांक्षाओं का बेहतर प्रतिनिधित्व करना।
  - **UNFCCC में समानता की मांग:** भारत की जलवायु संबंधी वार्ताओं में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यह समानता के सिद्धांतों तथा साझा किंतु विभेदित जिम्मेदारियों (Common But Differentiated Responsibilities: CBDR) और अलग–अलग क्षमताओं के लिए आवाज उठाता रहा है।

WTO में विवाद के मुद्दों पर भारत का रुख/पक्ष

निर्णय लेने की प्रकृति	विशेष और विभेदक व्यवहार (S&D) के प्रावधान की प्रासंगिकता	विवाद समाधान प्रणाली का पुनरुद्धार	सुधारों की प्रक्रिया
यह सुनिश्चित किया जाए कि बहुपक्षीय नियम बनाने की प्रक्रियाओं की न तो उपेक्षा की जाए और न ही उन्हें कमजोर किया जाए। साथ ही, सर्वसम्मति आधारित निर्णय लेने की प्रक्रिया जारी रहे।	कई क्षेत्रों में विकासशील और विकसित सदस्य–देशों के बीच अंतराल बढ़ गया है, इसलिए S&D प्रावधान चर्चा से परे हैं और इन्हें जारी रखा जाना चाहिए।	भारत ने अपीलीय निकाय में गतिरोध समाप्त करने की पुरजोर मांग की है, साथ ही एक–पक्षीय व्यापार उपायों पर रोक लगाने की भी मांग की है।	गैर–भेदभाव के सिद्धांतों, निश्चितता, पारदर्शिता और सर्वसम्मति से निर्णय लेने की परंपरा को पवित्र/ यथावत बनाए रखने की आवश्यकता है।

लाइफ (LiFE) – पर्यावरण के लिए जीवनशैली (Lifestyle for the Environment)

- CoP26 में, भारत ने **"जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए जलवायु न्याय"** का आह्वान किया था। इस आह्वान का आधार यह था कि विकसित देशों द्वारा **2050 तक निवल शून्य उत्सर्जन के लक्ष्य को प्राप्त करने के विचार का स्वरूप न्यायपूर्ण नहीं है।** इस विचार के तहत विकसित देशों ने अपनी जिम्मेदारी की अनदेखी करते हुए **इसका बोझ विकासशील देशों पर डाल दिया है।**
- जलवायु परिवर्तन से निपटने के क्रम में **'LiFE (लाइफ)' का मंत्र** भी साझा किया गया था। इसका उद्देश्य **पर्यावरण के प्रति जागरूक जीवनशैली को एक जन आंदोलन** का रूप देना था।

- **आर्थिक प्रतिबंध:** भारत संयुक्त राष्ट्र द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों का अनुसरण करता है। इसके बावजूद सत्य यह है कि भारत ने दूसरे देशों के खिलाफ एकतरफा प्रतिबंधों और व्यापार प्रतिबंधों का शायद ही कभी सहारा लिया हो। उदाहरण के लिए– **भारत ने दक्षिण अफ्रीका के रंगभेद शासन का विरोध और इसे प्रतिबंधित करने की वकालत** की थी। इसके अलावा, भारतीयों के साथ भेदभाव को लेकर 1989 से 1999 तक फिजी के साथ व्यापार को रोक दिया था। हाल ही में, भारत ने कश्मीर में आतंकवादी हमले के बाद 2019 में पाकिस्तान के **मोस्ट फेवर्ड नेशन (MFN) का दर्जा रद्द कर दिया था** और सीमा संघर्ष के बाद 2021 में **100 से अधिक चीनी ऐप्स पर प्रतिबंध** लगा दिया था। हालांकि, **भारत किसी देश पर एकतरफा प्रतिबंध नहीं लगाता है। इसके पास किसी भी प्रकार का स्वायत्त (या एकतरफा) प्रतिबंध कार्यक्रम नहीं है।**
- साथ ही, भारत अपनी **रणनीतिक स्वायत्तता** को बनाए रखने के लिए अन्य देशों द्वारा लगाए गए एकतरफा आर्थिक प्रतिबंध का पालन करने के भी खिलाफ रहा है। उदाहरण के लिए–
  - भारत ने अफगानिस्तान में कार्गो और मानवीय सहायता को पहुंचाने में ईरान के रणनीतिक महत्व को देखते हुए **चाबहार बंदरगाह के लिए ईरान पर अमेरिकी प्रतिबंधों से छूट प्राप्त की।**
  - भारत ने रूसी (भारत का सदैव साथ देने वाला मित्र) S–400 मिसाइल रक्षा प्रणाली की खरीद पर CAATSA के माध्यम से **अमेरिका द्वारा प्रतिबंधों के खिलाफ सफलतापूर्वक छूट हासिल की।**
  - इसके अलावा, भारत ने रूस–यूक्रेन युद्ध की पृष्ठभूमि में G–7 देशों के दबाव के बावजूद **रूस के खिलाफ प्रतिबंध लगाने से इनकार कर दिया और तेल को खरीदना जारी रखा।**

संक्षेप में, भारत ने अपनी आर्थिक कूटनीति को अपने राष्ट्रीय हितों एवं वैश्विक आकांक्षाओं के अनुरूप आगे बढ़ाया है। परिणामस्वरूप, भारतीय आर्थिक कूटनीति कई दशकों से उन्नति करते हुए अब मौजूदा मांग को पूरा करने में समर्थ हो गई है।

भारतीय आर्थिक कूटनीति का बदलता स्वरूप

1950–1970 के दशक के दौरान

इस अवधि के दौरान भारतीय आर्थिक कूटनीति के तहत मुख्य रूप से ODA हासिल करने और विशेषकर अफ्रीकी एवं एशियाई देशों को ODA प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित किया गया था।

1980 के दशक

इस अवधि में आई.टी. क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करने के साथ दुनिया के लिए अपनी अर्थव्यवस्था को खोलने से वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में भारत की स्थिति मजबूत हुई।

1990 के दशक

इस अवधि में भारत ने विश्व व्यापार संगठन की सदस्यता ग्रहण की और विकासशील देशों के हितों के लिए आवाज उठाने लगा। इसके अलावा ODA में भी काफी वृद्धि हुई।

2010 के दशक

इस दौरान साझेदार देशों में महत्वपूर्ण परियोजनाओं के वित्त–पोषण हेतु दूसरे चरण की लाइन ऑफ क्रेडिट (LoC) को शुरू किया गया, जिससे प्रवासी भारतीयों की अधिक भागीदारी सुनिश्चित हुई। इसके साथ ही उप–राष्ट्रीय आर्थिक कूटनीति की अवधारणा भी उभर कर सामने आई। इसके अलावा, WTO में सुधारों की मांग को भी उठाया गया।

2020 के दशक

इस अवधि में भारत सक्रिय रूप से वैश्विक बाजार तक अपनी पहुंच को आगे बढ़ाने और गैर–टैरिफ बाधाओं को दूर करने की दिशा में प्रयास कर रहा है। इसके अलावा, ऊर्जा सुरक्षा को सुनिश्चित करने के साथ–साथ चिकित्सा कूटनीति का लाभ उठाने तथा ODA को बढ़ाने में लगा हुआ है।

1950–1970	1980	1990	2010	2020
अर्थव्यवस्था बड़े पैमाने पर आयात प्रतिस्थापन और लाइसेंस राज पर आधारित थी।	आर्थिक सुधार शुरू किए गए।	उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण (LPG) की नीति को अपनाया गया।	अर्थव्यवस्था मजबूत हुई और इसके लचीलेपन में भी वृद्धि हुई।	भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं।

आर्थिक कूटनीति मुख्यतः सहायता और सहयोग पर केंद्रित थी।

भारत ने वैश्विक परिदृश्य के नए नियमों को परिभाषित करने तथा इस दिशा में प्रयास करने की अपनी मंशा को जाहिर किया है।

वर्तमान युग में भारत की आर्थिक कूटनीति के तहत लक्षित क्षेत्र

वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में भू–राजनीतिक वास्तविकताएं बदल रही हैं। ऐसे परिदृश्य में विश्व के कुछ क्षेत्र भारत को वैश्विक आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभरने और आगे बढ़ने के लिए महत्वपूर्ण संभावनाएं और अवसर प्रदान कर रहे हैं।

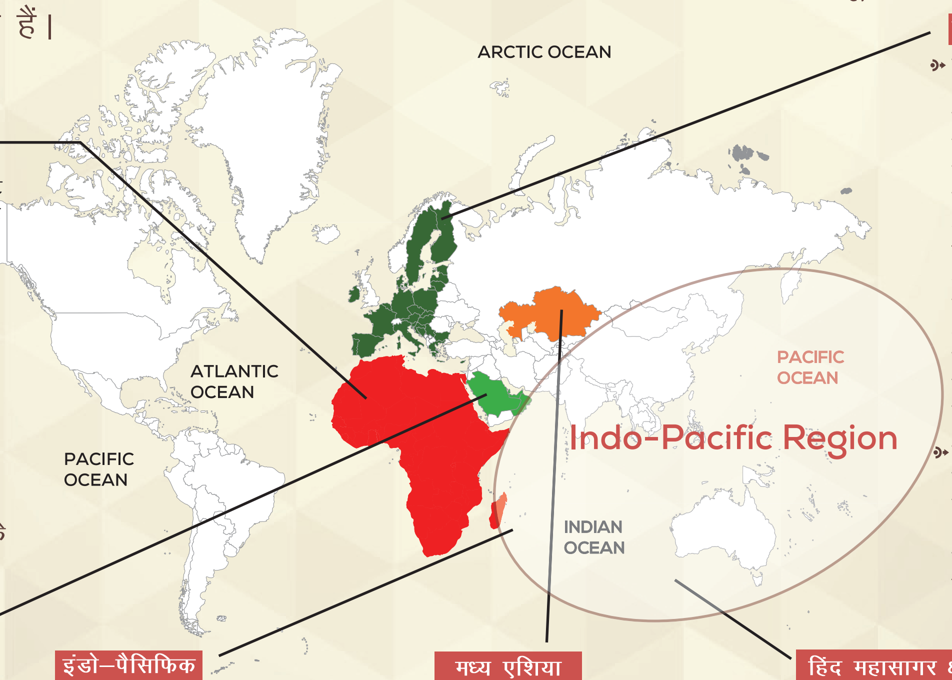

अफ्रीका

अफ्रीका के क्षेत्र लिथियम, ग्रेफाइट जैसे क्रिटिकल मिनरल की दृष्टि से अत्यधिक समृद्ध हैं। ये सभी खनिज पदार्थ भविष्य की वैश्विक हरित अर्थव्यवस्था के निर्माण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। दुर्लभ भू–तत्व (Rare Earth Elements: REE) में चीन के एकाधिकार का मुकाबला करने एवं हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में समुद्री सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए यह महाद्वीप अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके अलावा बढ़ते हुए मध्यम वर्ग के कारण यह निवेश हेतु एक प्रमुख गंतव्य स्थान भी है।

यूरोपीय संघ

- यूरोपीय संघ भारत को IOR में अपने हितों की रक्षा के लिए चीन के सबसे मजबूत विकल्प के रूप में देखता है। यहां असैन्य परमाणु सहयोग, 5G, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, शिक्षा और जलवायु परिवर्तन से निपटने में सहयोग के उभरते हुए क्षेत्र हैं।
- ब्रेग्ज़िट के बाद, ब्रॉड–बेस्ड ट्रेड एंड इन्वेस्टमेंट एग्रीमेंट (BTIA) पर मतभेदों को हल करने के लिए फिर से बातचीत जारी है।

खाड़ी क्षेत्र

भारत अपनी तेल आवश्यकताओं का 50% से अधिक हिस्सा GCC (खाड़ी सहयोग परिषद) देशों से पूरा कर रहा है। यहां ऊर्जा और नवीकरणीय ऊर्जा, जल संरक्षण, खाद्य सुरक्षा, डिजिटलीकरण सहयोग के उभरते हुए क्षेत्र हैं।

इंडो–पैसिफिक

- इंडो–पैसिफिक के माध्यम से होने वाले वैश्विक व्यापार में 50% से अधिक की हिस्सेदारी से यह क्षेत्र वैश्विक GDP के 62% के लिए उत्तरदायी है।
- अगले कई दशकों में सामरिक प्रतिस्पर्धा की दृष्टि से समुद्री और ब्लू इकॉनमी का वर्चस्व रहेगा।

मध्य एशिया

मध्य एशिया में स्थित सभी देशों में यूरेनियम, सोना, गैस जैसे खनिजों का पर्याप्त भंडार मौजूद है तथा ये जलविद्युत संसाधनों की दृष्टि से भी अत्यधिक समृद्ध हैं। यह विशेषता मध्य एशियाई देशों को क्षेत्रीय शांति बनाए रखने और चीन का मुकाबला करने में सक्षम बनाती है।

हिंद महासागर क्षेत्र (IOR)

मात्रा के हिसाब से भारत का 95% व्यापार तथा मूल्य के हिसाब से 68% व्यापार हिंद महासागर के माध्यम से होता है। इसके अलावा यह क्षेत्र खनिज और मत्स्यन संसाधनों का एक मूल्यवान स्रोत भी है।

भारत की आर्थिक कूटनीति के क्रियान्वयन में प्रमुख चुनौतियां क्या हैं?

- **बहुपक्षीय मंचों पर व्यापक समर्थन जुटाने में असमर्थता:** उदाहरण के लिए– भारत, WTO में खाद्यान्नों के सार्वजनिक भंडारण के स्थायी समाधान के लिए पर्याप्त समर्थन जुटाने में असफल रहा है। इसी तरह भारत ने **इलेक्ट्रॉनिक ट्रांसमिशन से जुड़े सीमा शुल्क** पर WTO द्वारा लगाए गए अस्थायी प्रतिबंध की समीक्षा करने की मांग की थी। इसके बावजूद प्रतिबंध को जारी रखा गया। गौरतलब है कि ऐसे इलेक्ट्रॉनिक ट्रांसमिशन में "डिजिटाइज़ करने योग्य उत्पादों" जैसे– संगीत, ई–पुस्तकें, फिल्म, सॉफ्टवेयर आदि की ऑनलाइन डिलीवरी शामिल होती है।
  - इस तरह के प्रतिबंध के परिणामस्वरूप **विश्व स्तर पर प्रति वर्ष लगभग 10 बिलियन डॉलर का नुकसान** होता है। **UN कॉन्फ्रेंस ऑन ट्रेड एंड डेवलपमेंट रिपोर्ट के अनुसार**, इस हानि का **95% विकासशील देशों द्वारा वहन** किया जाता है।
- **विकास संबंधी सहयोग के लिए एक स्पष्ट रणनीति का अभाव:** भारत खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य सुरक्षा, स्वच्छ ऊर्जा या सभी के लिए शिक्षा जैसे किसी विशिष्ट विकास लक्ष्य पर सक्रिय रूप से ध्यान केंद्रित करने में पीछे रहा है। अतः ऐसे में विभिन्न विकास योजनाओं के बीच किसी प्रकार का तालमेल नहीं बन पाता है और वे अप्रभावी रह जाती हैं।
  - **लाइन ऑफ क्रेडिट (LoC) का उपयोग आमतौर पर प्राप्तकर्ता देशों द्वारा** सड़क, पुल, रेलवे लाइन, विद्युत ट्रांसमिशन और जल आपूर्ति प्रणाली जैसी **छोटी विकास परियोजनाओं के वित्तीयन के लिए** किया जाता है।
- **विकासात्मक परियोजनाओं का खराब कार्यान्वयन:** खराब संवितरण दर (Disbursal Rate) और परियोजनाओं को पूर्ण करने का खराब रिकॉर्ड भारतीय LoC के कार्यान्वयन में एक प्रमुख बाधा रही है।
- **सहायता में क्षेत्रीय भेदभाव:** भारत द्वारा अधिकांश सहायता अपने पड़ोसी देशों को दी जाती है। इसलिए अफ्रीका जैसे दुनिया के अन्य हिस्से अक्सर उपेक्षित रह जाते हैं।
  - इस तरह के भेदभाव के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी कारण हैं– संसाधनों की कमी, IOR की सुरक्षा सुनिश्चित करना, IOR में चीन के प्रभुत्व को रोकना आदि।
- **वर्गीकृत नौकरशाही संरचना:** अलग–अलग मंत्रालयों के भीतर समन्वय और संचार में व्यापक अंतराल बना रहता है। इसके अलावा, सरकार और व्यवसायों के मध्य पर्याप्त तालमेल का अभाव और क्षमता संबंधी बाधाएं बनी हुई हैं। इससे आर्थिक और रणनीतिक लक्ष्यों का एकीकरण प्रभावित होता है।
- **ग्लोबल वैल्यू चेन (GVC) में वस्तुओं की घटती हिस्सेदारी:** यद्यपि भारत का कुल निर्यात बढ़ रहा है, लेकिन 2011 के बाद से मर्चेंडाइज एक्सपोर्ट (जो एक श्रम प्रधान क्षेत्र है) की वृद्धि दर में लगातार गिरावट आई है। 'फैक्ट्री एशिया' कहे जाने वाले क्षेत्र के निकट स्थित होने के बावजूद भारत GVC में उस तरह नहीं जुड़ा है जैसे बांग्लादेश, वियतनाम आदि देश जुड़े हैं। इसके लिए निम्नलिखित कारण उत्तरदायी हैं:
  - **विनिर्माण क्षेत्र में धीमा विकास और वित्तीय बाधाएं।**
  - **उच्च लॉजिस्टिक्स लागत** जो चीन की तुलना में तिगुनी और बांग्लादेश की तुलना में दोगुनी है।
  - **FDI को आकर्षित करने की क्षमता कम होना।**
  - वस्त्र और परिधान, रत्न और आभूषण, चमड़ा और चमड़े के उत्पादों जैसे श्रम गहन क्षेत्रों में भारत की **निर्यात प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता में गिरावट।**
- **चीन से मुकाबला:** इस मामले में भारत के लिए उभरती चिंताओं के प्रमुख क्षेत्रों में शामिल हैं– दक्षिण एशियाई क्षेत्र में चीन से प्रतिस्पर्धा तथा इसका आर्थिक प्रभुत्व, सीमा विवाद, ऊर्जा और संसाधन गलियारों की सुरक्षा के लिए हिंद–प्रशांत क्षेत्र में चीन की उपस्थिति का मुकाबला करना आदि।
  - विशेषज्ञों का मानना है कि चीन के साथ भारत का पूर्ण आर्थिक अलगाव संभव नहीं है। अतः ऐसे में चीन से निपटने के लिए अपनी रणनीति में एक उचित संतुलन की खोज भारत के लिए सबसे बड़ी चुनौती है।

उभरते हुए मुद्दे:

- **संरक्षणवाद:** वैश्वीकरण के लाभ के रूप में लोगों, वस्तुओं, सेवाओं और पूंजी की मुक्त आवाजाही सुनिश्चित हुई है और वैश्विक देशों के मध्य अत्यधिक निकटता आई है। हालांकि, वर्तमान में बढ़ती असमानता के कारण ये लाभ सवालों के घेरे में हैं।
  - इनके कारण **आर्थिक अलगाव, आर्थिक संप्रभुता** और **आत्मनिर्भरता** के साथ–साथ बहुपक्षीय नियमों की जगह द्विपक्षीय समझौतों को दी जाने वाली प्राथमिकता और अप्रवासन विरोधी भावना पर बहस तेज हो गई है।
- यू.एस.ए. और यू.के. जैसे विकसित देश उदार बहुपक्षीय प्रणाली के संस्थापक रहे हैं। इसके बावजूद आज इन्हीं देशों में बहुपक्षीय संस्थानों से समर्थन वापस लेने की प्रवृत्ति देखी जा रही है। इसके कारण बहुपक्षीय संस्थान कमज़ोर हो रहे हैं।
  - उदाहरण के लिए– यू.एस.ए. द्वारा **WTO के अपीलीय निकाय** में नए सदस्यों की नियुक्ति में बाधा डालने के कारण अपीलीय निकाय का काम–काज ठप पड़ गया है।
- **मानवीय संकट:** शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण से संबंधित समन्वित क्षति के कारण, महामारी ने सतत विकास लक्ष्यों पर की गई दशकों की प्रगति को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है।

चीन के साथ संतुलन बनाना: आकांक्षा और उपयुक्तता के मध्य अंतराल को पाटना

चीन के साथ पूर्ण आर्थिक अलगाव यानी डिकपलिंग (Decoupling) की स्थिति में आने वाली चुनौतियां	क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी (RCEP) में चीन की उपस्थिति, जिसमें अधिक लचीली आपूर्ति श्रृंखला के निर्माण हेतु प्रतिबद्धता व्यक्त की गई है।
	एशियन इन्फ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट बैंक (AIIB) और न्यू डेवलपमेंट बैंक (NDB) जैसे क्षेत्रीय आर्थिक संस्थानों की स्थापना में चीन की सफलता।
	फार्मास्यूटिकल्स सामग्री, ऑटोमोबाइल और डिजिटल क्षेत्रक के मामले में भारत की चीन पर निर्भरता।
	निवेश पर चीन–यूरोपीय संघ (EU) समझौता चीन के महत्व को बढ़ाता है।
	कई प्रमुख भारतीय कंपनियां जो चीन में स्थित हैं, उन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।
	पूर्ण आर्थिक अलगाव से निवेश का मूल्य बढ़ सकता है और भारतीय अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंच सकता है।
	चीन, द्विपक्षीय प्रतिबंध के बावजूद बहुपक्षीय संस्थाओं के माध्यम से भारतीय बाजारों तक पहुंच बना सकता है।
	चीन की कंपनियों का भारतीय उद्योगों (जैसे– पेटीएम) में व्यापक निवेश है।

हालांकि, विशेषज्ञ **चीन के साथ जुड़ाव** में आवश्यक परिवर्तन करने का सुझाव देते हैं। ये परिवर्तन ऐसे होने चाहिए जिससे चीन के आर्थिक विकास पथ की प्रवृत्ति का विरोध किए बिना **नकारात्मक रणनीतिक नतीजों को रोका जा सके**, जैसे–

- **चीन में व्यापार, निवेश और सेवाओं में समान अवसर** के लिए वार्ताएं आयोजित की जा सकती हैं।
- **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), 5G और डिजिटल तकनीकों** के क्षेत्र में वैकल्पिक भागीदारों की तलाश की जानी चाहिए। हाल ही में, सेमीकंडक्टर की आपूर्ति के लिए ताइवान के साथ संबंधों को पुनः नया स्वरूप प्रदान करना इसका एक अच्छा उदाहरण है।
- **बहुपक्षीय संस्थानों के एजेंडे** को फिर से परिभाषित करना चाहिए ताकि टैरिफ, उत्पत्ति के नियमों (Rules of Origin) और व्यापार घाटे के स्थान पर गुणवत्ता मानकों, भ्रष्टाचार रोधी मानदंडों और पर्यावरण के अनुकूल अनुबंधों पर ध्यान केंद्रित किया जा सके।
- **प्रत्येक देश के साथ रुचि और सहयोग के बिंदुओं की तलाश कर** स्वतंत्र रूप से चीन पर आर्थिक निर्भरता को समाप्त किया जाना चाहिए।

- 2003 में विदेश मंत्रालय (MEA) द्वारा दिए गए सुझाव के अनुसार **राजनीतिक और आर्थिक संबंधों को एक–दूसरे से अलग करके देखने की प्रवृत्ति से बचना चाहिए।**
- भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया द्वारा **2021** में शुरू की गई आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन पहल **(Supply Chain Resilient Initiative)** को समयबद्ध तरीके से चीन के संदर्भ में एक प्रभावी विकल्प के रूप में उपयोग किया जाना चाहिए।

- अब भारत की कूटनीति के समक्ष अंतिम परीक्षा यह है कि वह अपने सहयोगी देशों में जीवन स्तर को कैसे सुधारेगा।

- **उभरती प्रौद्योगिकियां:** चौथी औद्योगिक क्रांति आर्थिक संवृद्धि की रीढ़ के रूप में उभर रही है। यह भारतीय आर्थिक कूटनीति के पुनः निर्माण की आवश्यकता को रेखांकित करती है।

एक छोटी सी वार्ता!
"मेड इन इंडिया" उतना लोकप्रिय क्यों नहीं है जितना कि "मेड इन चाइना"?

विनय: अरे विनी, हैप्पी दिवाली! तुमने तो अपने घर को बहुत अच्छी तरह से सजाया है!

विनी: धन्यवाद विनय। मुझे सड़क के किनारे स्थित बाजार से बहुत कम कीमत पर ये सभी अनूठे सजावट के सामान मिल गए थे। लेकिन अफसोस की बात तो यह है कि ये सभी मेड इन चाइना हैं। मुझे आश्चर्य इस बात का है कि भारत इन सामानों को क्यों नहीं बना सकता है।

विनय: हाँ यह सच है! ऐसा इसलिए है क्योंकि चीन पहले ही बड़े पैमाने पर जन उपभोग की वस्तुओं वाले भारतीय बाजार पर कब्जा जमा चुका है। भारत अभी भी चीनी उत्पादों जितने दिलचस्प और सस्ते उत्पादों के विनिर्माण हेतु संघर्ष कर रहा है।

विनी: निश्चित रूप से! लेकिन चीन ने यह उपलब्धि कैसे प्राप्त की?

विनय: चीन शुरू में ही विनिर्माण कारखाने की स्थापना कर वैश्विक अर्थव्यवस्था में प्रवेश कर गया है और यही कारण है कि वह इसका लाभ उठा रहा है। इसने 1970 के दशक में आर्थिक सुधारों और व्यापारिक उदारीकरण की शुरुआत की थी। इसके परिणामस्वरूप कई देशों की मांगों को पूरा करने के लिए आवश्यकता अनुरूप कम कीमतों वाली वस्तुओं का बड़े पैमाने पर उत्पादन करने लगा। तुम्हे पता है, चीन द्वारा बार्बी गुड़िया भारत और जापान दोनों के लिए अलग–अलग रूपों में बनाई जाती हैं!

विनी: यह आश्चर्यजनक है! लेकिन भारत अब तक पीछे क्यों रहा है?

विनय: स्वतंत्रता के बाद भारत की अपनी विकासात्मक प्राथमिकताएं थीं। 1990 के दशक में भारत में आर्थिक सुधार शुरू हुए लेकिन चीन के विपरीत यह सुधार धीरे–धीरे हुए थे। इसके परिणामस्वरूप, भारत वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं का हिस्सा नहीं बन सका। हालांकि, भारत ने निश्चित रूप से दूरसंचार प्रौद्योगिकी संबंधी सेवाओं और ऑटोमोबाइल के निर्यात में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। उदाहरण के लिए– महिंद्रा के ट्रैक्टर अमेरिकी किसानों के बीच बहुत लोकप्रिय हैं।

विनी: लेकिन, इस दृष्टिकोण ने वैश्विक विनिर्माण क्षेत्रक में भारत की उपस्थिति को कम कर दिया है। इन कंपनियों का विनिर्माण क्षेत्रक में अपना एक अलग स्थान तो है लेकिन उनके उत्पाद जनसाधारण के लिए नहीं होते हैं।

विनय: विनी, मैं तुम्हारी बात से सहमत हूँ। लेकिन मेरा मानना है कि अब "मेक इन इंडिया" और "आत्मनिर्भर भारत" अभियान निश्चित रूप से भारत में बड़े पैमाने पर विनिर्माण और वैश्विक स्तर पर 'ब्रांड इंडिया' को बढ़ावा देंगे!

विनी: हाँ, मुझे भी ऐसी ही उम्मीद है। मैं आने वाले समय में गर्व से और अधिक "मेड इन इंडिया" उत्पादों को खरीदने के लिए उत्सुक रहूँगी।

भारत की आर्थिक कूटनीति को कैसे बेहतर बनाया जा सकता है ताकि यह राष्ट्रीय उद्देश्यों के साथ-साथ वैश्विक आकांक्षाओं को भी प्राप्त करने में सक्षम हो सके?

- **घरेलू सुधार:** आर्थिक कूटनीति और घरेलू सुधार गहन रूप से आपस में जुड़े हुए हैं। भारत वैश्विक देशों के साथ किस प्रकार के संबंध स्थापित करता है, यह मुख्य रूप से निम्नलिखित घटकों पर निर्भर करेगा:
  - अपनी शक्ति और सामर्थ्य के संबंध में नई **अवधारणाओं को सृजित करने की इसकी क्षमता पर,**
  - विकास और उत्पादकता के **नवीन साधनों** (जैसे– फार्मास्यूटिकल्स, ऑटोमोटिव और दूरसंचार क्षेत्र) **के विनिर्माण की इसकी क्षमता पर,**
  - **समृद्धि और विकास की दिशा में** तथा इस दिशा में वैश्विक जगत को शामिल करने के इसके मजबूत प्रयास पर,
  - **व्यापक और वृहद स्तरों पर संलग्न होने की इसकी प्रतिबद्धता और क्षमता पर।**
- **एक आर्थिक कूटनीति तैयार करना:** भारत के अपने विकास संबंधी सहयोगियों के साथ संबंध अत्यधिक मधुर रहे हैं। हालांकि, इन संबंधों का लाभ उठाने के लिए, भारत को एक दीर्घकालिक आर्थिक कूटनीतिक रूपरेखा तैयार करनी चाहिए। साथ ही, इस रूपरेखा के तहत निम्नलिखित घटकों पर विशेष ध्यान केंद्रित करना चाहिए:
  - पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को स्थिर बनाए रखने पर जोर दिया जाना चाहिए।
  - हिंद–प्रशांत क्षेत्र में चीन की आक्रामकता के विरुद्ध जवाबी कार्रवाई की जानी चाहिए।
  - यूरेशियाई महाद्वीप के साथ संबंधों को बढ़ाना चाहिए।
  - प्रमुख या उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं के साथ सहयोग बढ़ाना चाहिए।
  - स्थल और जल दोनों पर भारत के रणनीतिक हितों की रक्षा और विकास हेतु प्रयास करना चाहिए।
- **सहायता कार्यक्रम में सुधार करना:** ध्यातव्य है कि चीन और पश्चिमी देशों के विपरीत, भारत के पास भागीदार देशों का समर्थन करने के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध नहीं हैं। इसलिए, भारत को:
  - प्रत्येक देश के हिसाब से एक **लक्षित रणनीति तैयार करनी** चाहिए। साथ ही, सहयोग को और मजबूत बनाने के लिए स्वास्थ्य सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन अनुकूलन और लैंगिक समानता जैसे कुछ क्षेत्रों की पहचान करनी चाहिए।
  - घनिष्ठ और अधिक प्रभावी संबंधों के लिए **अंतर्राष्ट्रीय विकास सहयोग एजेंसी** की स्थापना और तेजी से विकसित हो रहे प्रतिस्पर्धी विकास वित्त–पोषण परिदृश्य की पहचान की जानी चाहिए।
  - सॉवरेन डेवलपमेंट फंड के पूरक के रूप में तथा अधिक लचीलापन एवं व्यापकता प्रदान करने के लिए **निजी क्षेत्रक के निवेश को समर्थन प्रदान करना चाहिए।**
  - **हितधारकों के बीच अधिक सहयोग बढ़ाना:** भागीदार देशों में कम लागत पर विकास परियोजनाओं को पूरा करने के लिए भारतीय नागरिक समाज संगठनों, भारतीय डायस्पोरा, गैर–सरकारी संगठनों जैसे हितधारकों के बीच सहयोग को बढ़ाया जाना चाहिए।
    - उदाहरण के लिए– प्रथम और बेयरफुट कॉलेज अफ्रीका में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं।
- **GVC के मामले आगे बढ़ाना:** इस संदर्भ में लक्षित क्षेत्र–स्तरीय नीतियों की आवश्यकता है। इससे यह सुनिश्चित किया जा सकेगा कि फर्म्स या व्यवसायिक कंपनियां GVCs में लाभप्रद रूप से जुड़ रही हैं। इसके अलावा, मल्टी–मॉडल कनेक्टिविटी और **नेशनल इंफ्रास्ट्रक्चर पाइपलाइन (NIP)** के लिए **पी.एम. गति शक्ति** के तहत राष्ट्रीय मास्टर प्लान (NMP) के प्रभावी कार्यान्वयन पर भी जोर दिया जा सकता है, क्योंकि वे:
  - ईज ऑफ डूइंग बिजनेस को सुगम बनाने में मदद कर सकती हैं,
  - ट्रेड लोजिस्टिक्स में सुधार और अवसंरचनात्मक चुनौतियों का समाधान कर सकती हैं,
  - GVC लिंकेज का विस्तार करने के लिए लास्ट माइल कनेक्टिविटी को बढ़ावा दे सकती हैं।

- **उभरते अवसर:**
  - **स्वास्थ्य कूटनीति:** अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस और गुजरात के जामनगर में WHO ग्लोबल सेंटर फॉर ट्रेडिशनल मेडिसिन की स्थापना जैसे कदम भारत को समान विचारधारा वाले घटकों के साथ गठबंधन स्थापित करने में सक्षम बना सकते हैं। इसके माध्यम से भारत WHO के मंच पर होने वाले समझौतों को अंतिम रूप देने में सक्षम हो सकेगा।
    - हालांकि, वैश्विक स्वास्थ्य रणनीतियों के परिणाम, राष्ट्रीय संदर्भ से जुड़े हुए हैं। अतः ऐसे में भारत को वैश्विक स्वास्थ्य कूटनीति में अग्रणी भूमिका का निर्वहन करने हेतु अपनी सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली को मजबूत करना होगा।

विचारणीय तथ्य

वित्तीय सहायता निम्नलिखित तरीकों द्वारा प्रदान की जाती है:

- **'प्रथम'** द्वारा जारी **ASER (शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट) सर्वे:** यह ग्रामीण भारत में **बच्चों के लर्निंग आउटकम के आकलन** हेतु संचालित **नागरिक–आधारित सर्वेक्षण** है। लैटिन अमेरिका, अफ्रीका और एशिया के कई देशों के विभिन्न संगठनों द्वारा **पीपुल्स एक्शन फॉर लर्निंग (PAL)** नेटवर्क के जरिए **ASER** को डिजाइन और कार्यान्वित किया जा रहा है।
- भारत के **बेयरफुट कॉलेज इंटरनेशनल** ने अपनी तरह का पहला **महिला–केंद्रित** वैश्विक नेटवर्क तैयार किया है। यह नेटवर्क **90 से अधिक देशों में सीमांत ग्रामीण समुदायों के संधारणीय विकास** की दिशा में कार्यरत है। प्रत्येक केंद्र **निरक्षर और अर्ध–साक्षर महिलाओं को स्थानीय स्तर पर प्रासंगिक प्रशिक्षण के अवसर** प्रदान करता है। साथ ही, यह स्व–सहयोग और लचीलेपन को बढ़ाने पर जोर देता है।

  - **डिजिटल क्षेत्र के लिए डोमेन विशेषज्ञ:** तकनीकी विशेषज्ञ नंदन नीलेकणि को आधार के सफलतापूर्वक कार्यान्वयन के लिए भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण का अध्यक्ष बनाया गया था।
    - बहुपक्षीय संस्थानों में साइबर सुरक्षा, डेटा गोपनीयता जैसे मुद्दों पर बातचीत के दौरान विशेषज्ञों को आकर्षित करने के लिए इस मॉडल को दोहराया जाना चाहिए।
  - **मिनीलैटरल संगठन:** भारत को WTO और UNSC जैसे बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग प्राप्त करने के लिए बहु–क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल (बिम्सटेक/BIMSTEC) और मेकांग–गंगा सहयोग (MGC) जैसे मिनीलैटरल संगठनों में अपनी सक्रिय नेतृत्वकारी भूमिका के निर्वहन पर भी विचार करना चाहिए।
  - **ब्लू इकोनॉमी के लिए समर्पित मंत्रालय:** यह सुरक्षा, समुद्री बजटीय आवंटन, नौसैनिक सामानों की खरीद, समुद्री व्यापार, ऊर्जा आवश्यकताओं आदि सहित ब्लू इकोनॉमी के सभी घटकों को एक ही मंत्रालय के अधीन लाने में सक्षम बनाएगा। इसके परिणामस्वरूप बेहतर नीतियों के निर्माण और निष्पादन में मदद मिलेगी।
- ब्रांड इंडिया को बढ़ावा देना: भारत को एक प्रस्ताव लाना चाहिए जो वास्तव में "ब्रांड इंडिया" को विशिष्ट बनाता हो (इन्फोग्राफिक देखें)।

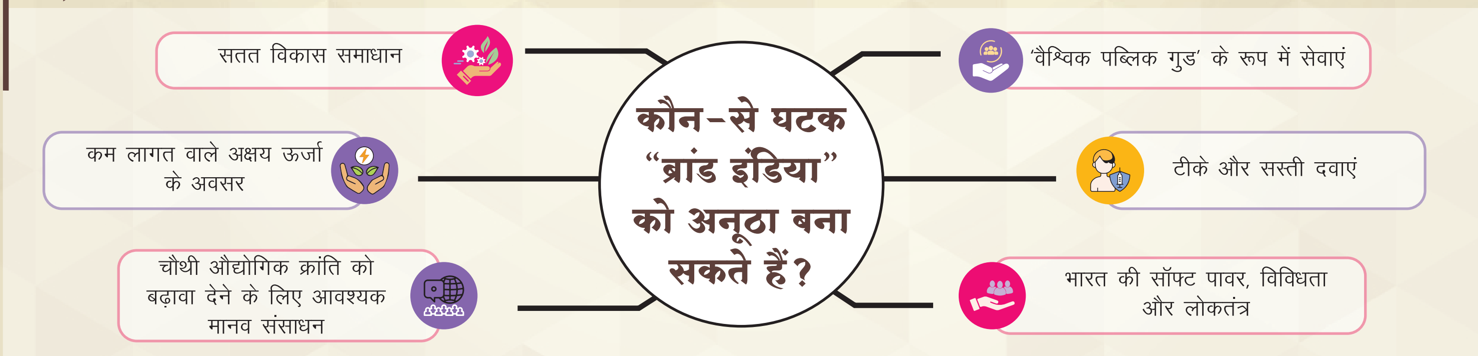

- **नीति निर्माण में लचीलापनः** आर्थिक कूटनीति विशेषकर आज की दुनिया में, देश के लिए लाभ बढ़ाने के क्रम में नीतियों के समायोजन पर बल देती है।
  - उदाहरण के लिए– बांग्लादेश और कंबोडिया जैसे प्रतिस्पर्धी देशों को दी गई शून्य शुल्क पहुंच की तुलना में यूरोपीय संघ और यू.के. जैसे प्रमुख बाजारों में भारत के परिधान उद्योग द्वारा सामना किए जाने वाले उच्च टैरिफ, भारत के निर्यात प्रदर्शन पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहे हैं। इस तरह की व्यापार बाधा को उन देशों में कारखानों की स्थापना करके दूर किया जा सकता है जिन्होंने इन आकर्षक बाजारों में मुक्त व्यापार समझौते कर रखे हैं। इस प्रकार, जब निर्यात संवर्धन की बात आती है तो **मेक इन इंडिया** में **"मेक विद इंडिया"** को भी शामिल किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

स्वतंत्रता के बाद से भारत की आर्थिक कूटनीति, मौजूदा संघों एवं साझेदारी के साथ बड़े पैमाने पर **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और एकजुटता** द्वारा निर्देशित होती रही है। ऐसा **परोपकारिता और व्यावहारिकता** के असामान्य मिश्रण के बावजूद संभव हुआ है। "न्यू नॉर्मल" आर्थिक कूटनीति के तहत प्रतिस्पर्धा और सहयोग; आकांक्षाओं और प्राप्ति योग्य लक्ष्यों; तथा क्षेत्रीय और वैश्विक आवश्यकताओं के मध्य संतुलन बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए। इसे मजबूत नींव अर्थात् नियम–आधारित सहयोग पर आगे बढ़ाया जाना चाहिए। साथ ही, घरेलू स्तर पर भारत की ठोस कार्रवाइयां, वैश्विक मंच पर भारत को एक प्रमुख अभिकर्ता के रूप में स्थापित करने में मदद करेंगी।

टॉपिक- एक नज़र में

आर्थिक कूटनीति विदेश नीति के संचालन हेतु एक आवश्यक साधन है। यह **अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के निष्पादन में आर्थिक साधनों के उपयोग** पर जोर देता है। इसका प्रयोग देश के आर्थिक, राजनीतिक और रणनीतिक हितों को प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

आर्थिक कूटनीति के प्रमुख साधन	आर्थिक कूटनीति के उपयोग में भारत की सफलता
निवेश को आकर्षित करना और निर्यात को बढ़ावा देना: इस तरह की गतिविधियां किसी भी देश को एक आर्थिक शक्ति के रूप में उभरने में मदद करती हैं।	गौरतलब है कि भारत ने **वैश्विक स्तर पर अपनी अर्थव्यवस्था को और अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए** अनेक पहलों को शुरू किया है। इनमें शामिल हैं–FDI के लिए मानदंडों को उदार बनाना, विभिन्न क्षेत्रकों के लिए PLI योजना, आत्मनिर्भर भारत अभियान आदि। उपर्युक्त कदमों के परिणामस्वरूप, भारत में FDI अंतर्वाह 2020-21 में बढ़कर अपने उच्चतम स्तर अर्थात् 81.97 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया था।
भागीदार देशों के लिए वित्त जुटाना: भागीदार देशों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने से एक विश्वसनीय विकास भागीदार के रूप में देश की छवि को मजबूत करने में मदद मिलती है।	**बहुपक्षीय मंचों के जरिए वित्त–पोषण:** इंडिया–यू.एन. डेवलपमेंट फंड, अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन इत्यादि जैसे मंचों के जरिए वित्त–पोषण प्रदान करने की कोशिश की गई है। अनुदान के साथ–साथ लाइन ऑफ क्रेडिट के रूप में **साझेदार देशों को द्विपक्षीय विकास सहायता** प्रदान करना।
अंतर्राष्ट्रीय नियमों को स्थापित करने और उन्हें लागू करने के लिए समर्थन जुटाना: इस तरह के प्रयास, किसी भी देश के लिए एक अनुकूल परिदृश्य का निर्माण करते हैं। इससे मुख्यतः देश के हितों को पूरा करने के संदर्भ में अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को देश के अनुकूल समायोजित करने में मदद मिलती है।	भारत, **दक्षिण–दक्षिण सहयोग के लिए एक नेतृत्वकर्ता के रूप में उभरा** है। साथ ही, यह **समान विचारधारा वाले विकासशील देशों के बीच गठबंधन के निर्माण हेतु एक** अग्रणी भूमिका के रूप में अपना योगदान देता रहा है, ताकि गठबंधन के माध्यम से संयुक्त राष्ट्र WTO, विश्व स्वास्थ्य संगठन जैसे मंचों पर साझा हितों को संरक्षित किया जा सके।
आर्थिक प्रतिबंध: इसका उपयोग उन देशों के विरुद्ध किया जाता है जिनके साथ अच्छे राजनीतिक संबंध नहीं होते हैं। इसके तहत उन देशों को किसी विशिष्ट देश के अनुकूल नीतियों को अपनाने के लिए बाध्य किया जाता है।	भारत **संयुक्त राष्ट्र द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों का पालन** करता है। हालांकि, भारत ने अन्य देशों के खिलाफ **एकतरफा प्रतिबंधों** और व्यापार प्रतिबंधों का **शायद ही कभी सहारा लिया है।**

भारत की आर्थिक कूटनीति के क्रियान्वयन में प्रमुख चुनौतियां

- WTO जैसे बहुपक्षीय मंचों में सुधार हेतु **व्यापक समर्थन जुटाने मे असमर्थ होना।**
- **विकास संबंधी सहयोग के लिए एक स्पष्ट रणनीति का अभाव:** यह विकास संबंधी प्रयासों को प्रभावित करती है।
- **सहायता में क्षेत्रीय भेदभाव तथा विकासात्मक परियोजनाओं का खराब कार्यान्वयन:** इसके लिए उत्तरदायी कारण हैं– संसाधनों की कमी, IOR की सुरक्षा सुनिश्चित करना, IOR में चीन के प्रभुत्व को रोकना आदि।
- **वर्गीकृत नौकरशाही संरचना:** इससे आर्थिक और रणनीतिक लक्ष्यों का एकीकरण प्रभावित होता है।
- **विनिर्माण क्षेत्र में धीमा विकास और वित्तीय बाधाओं के कारण GVC में वस्तुओं की घटती हिस्सेदारी।**
- दक्षिण एशियाई क्षेत्र में **चीन से प्रतिस्पर्धा।**
- **उभरते मुद्दे जैसे संरक्षणवाद,** बहुपक्षीय संस्थानों का कमजोर होना, मानवीय संकट आदि।

राष्ट्रीय उद्देश्यों के साथ–साथ वैश्विक आकांक्षाओं को प्राप्त करने की दिशा में भारत की आर्थिक कूटनीति को सक्षम बनाने हेतु तरीके

- **घरेलू सुधार:** यह मुख्य रूप से अग्रलिखित घटकों पर निर्भर करेगा: शक्ति और सामर्थ्य के संबंध में **नई अवधारणाओं को सृजित करने** तथा विकास और उत्पादकता के **नवीन साधनों के निर्माण की इसकी क्षमता पर।**
- **एक आर्थिक कूटनीति तैयार करना:** अग्रलिखित घटकों पर विशेष ध्यान केंद्रित करते हुए भारत को एक दीर्घकालिक आर्थिक कूटनीतिक रूपरेखा तैयार करनी चाहिए: पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को स्थिर बनाए रखने पर जोर दिया जाना चाहिए; हिंद–प्रशांत क्षेत्र में चीन की आक्रामकता के विरुद्ध जवाबी कार्रवाई की जानी चाहिए; यूरेशियन महाद्वीप के साथ संबंधों को बढ़ाना चाहिए आदि।
- सहायता कार्यक्रम में सुधार करना: इसके तहत– एक **लक्षित देशवार रणनीति तैयार करनी** चाहिए; **अंतर्राष्ट्रीय विकास सहयोग एजेंसी** की स्थापना करनी चाहिए; **निजी क्षेत्रक के निवेश को समर्थन** प्रदान करना चाहिए आदि।
- **GVC के मामले आगे बढ़ाना:** ईज ऑफ डूइंग बिजनेस को सुगम बनाने, ट्रेड लॉजिस्टिक्स में सुधार करने और अवसंरचनात्मक चुनौतियों का समाधान करने के लिए **नेशनल इंफ्रास्ट्रक्चर पाइपलाइन (NIP)** और **पी.एम. गति शक्ति मिशन** के प्रभावी कार्यान्वयन पर जोर देना चाहिए।
- **उभरते अवसर का लाभ उठाना:** स्वास्थ्य कूटनीति को बढ़ावा देना, डिजिटल क्षेत्र के लिए डोमेन विशेषज्ञ की भागीदारी को प्रोत्साहित करना, मिनीलैटरल संगठनों में भारत की सक्रिय नेतृत्वकारी भूमिका पर विचार करना आदि।
- **ब्रांड इंडिया को बढ़ावा देना, नीति निर्माण में लचीलेपन** पर जोर देना आदि।